किटिभ

सोरियॉसिस

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

किटिभ (सोरियॉसिस) क्या है?

दूषित पित्त एवं कफ, वात के साथ मिलकर किटिभ नामक त्वचारोग उत्पन्न करते हैं।

इसके लक्षण क्या हैं?

- लाल/काले वर्ण के गोल चकते त्वचा पर आते हैं जिन्हें खुजलाने पर श्वेत वर्ण की चमकदार पपड़िया उतरती हैं।
- त्वचा खुरदरी पतली एवं कभी-कभी स्राव युक्त हो जाती है।
- स्वाभाविक रूप से पुनरावर्ती रोग।

इसके कारण क्या हैं?

निम्न वस्तुओं का नियमित उपभोग इस रोग को उत्पन्न कर सकता हैं।

- विरोधी/विपरीत आहार जैसे दूध एवं मछली का एक साथ सेवन।
- कुछ आहार जैसे -मूली, तिल, गुड़, नवीन अन्न आदि।
- अस्वास्थ्यकर पदार्थ जैसे नमक एवं अम्ल पदार्थ।
- तत्काल विपरीत वातावरण का संपर्क जैसे गरम और ठंडा।
- प्राकृतिक वेगों को रोकना विशेषतः वमन (उल्टी)।
- पापकर्म जैसे बुजुर्ग, विद्वान की निंदा करना एवं दूसरों को कष्ट या नुकसान पहुचांना।

आयुर्वेदीय उपचारः

- *तुवरक* तैल या *करंज* तेल का बाह्य प्रयोग
- गुडूची स्वरस, अश्वगंधारिष्ट आरोग्यवर्धिनी वटी, खदिरारिष्ट एवं पंचतिक्त घृत आभ्यंतर प्रयोग हेतु।

आयुर्वेदिक विशेषज्ञों की देखरेख में संशोधन कर्म (पंचकर्म) के पश्चात औषधियाँ प्रदान की जा सकती हैं।

✓ पथ्य (क्या करें)

- ✓ पुराने चावल, गेहू, जौ का प्रयोग
- ✓ मूँगदाल का प्रयोग
- ✓ सब्जियां जैसे ककड़ी, चिंचिडा, तोरी, लौकी आहार में लाभदायक है।
- ✓ खदिर, हरिद्रा, गुडूची, निंब, बाकुची, तुवरक, करंज, दारूहरिद्रा इन औषधियों का काढ़ा स्नान के लिए लाभप्रद है।

X अपथ्य (क्या न करें)

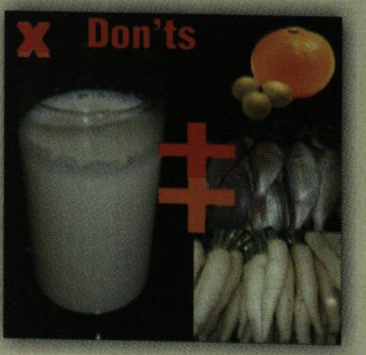

- X नवीन अन्न,मूली, दही,गुड़, नमक, मछली आदि का अत्यधिक प्रयोग
- X विरूद्ध आहार का नियमित प्रयोग।
- X अनियमित भोजन।
- X प्राकृतिक वेगों को धारण करना।

सी.सी.आर.ए.एस. का योगदान

- निदान चिकित्सात्मक प्रयोग के अंतर्गत आरोग्य वटी, किशोर गुग्गुल का अभ्यान्तर प्रयोग तथा चक्रमर्द तैल बाह्य प्रयोग का पुर्नमूल्यांकन
- निंबीडीन का आविष्कार
- **777** तैल का आविष्कार